

संवेदन कल्चरल प्रोग्राम

“Theatre of Transformation. Samvedan Cultural Programme attempts to dissolve boundaries....”

“It’s not men versus women.... It’s the institution of patriarchy, which operates on power-ururpation by a group of elite men and oppressed not only women but many men- that’s what we are up against...”
-The Hindu, Sunday, June-29,2008.

“Such experiments must be encouraged. People should see such plays to understand the predicament of others. And this is how art can make its mark and contribute to Society.”

-Ahmedabad Mirror, 17-2-2008.

“महिलाओं पर हो रहे अत्याचारों को रोकने के प्रयास किये जाने चाहिए और इस तरह के नुक्कड़ नाटकों का प्रभाव समाज के लोगों पर पड़ेगा। इस तरह के आयोजनों को कराया जाना चाहिए!”

-युनाईटेड भारत (इलाहाबाद) 8-3-08.

संयोजक:	हिरेन गांधी
लेखन :	सरूप ध्रुव
दिग्दर्शन :	रेहाना कुरेशी, हिरेन गांधी.
संगीत :	जयेश सोलंकी
निर्माण व्यवस्था :	महेन्द्र सोलंकी
कलाकार :	लक्ष्मी, रोशन, शाहीन, चेतना, रोमिल, नरेन्द्र, प्रवीण, भूपत, मनोज, मुकेश, माईकस, अमित, शकील, और अनीशा...
शो संपर्क :	वकार काड़ी
निर्माण सहयोग :	एक्शन एर्ड, सी.एम.सी., गुर्जरवाणी.



B-2/1, Sahajanand Tower,
Beside Railway Overbridge,
Jivraj Park,
AHMEDABAD. 380 051
GUJARAT.

Phohe: 079-2681 5484 / 6541 3032
email: hiren_darshan@yahoo.com
festival@eth.net

ऐसा क्यों?

पितृसत्ता के साथ हिंसा का रिश्ता उस की शुरुआत से ही चला आया है। जैसे एक ही सिक्के के दो पहलू! सामाजिक, आर्थिक और राजकीय व्यवस्था चाहे जो भी हो, जैसी भी हो –पितृसत्ता उस में रची-बसी होती है। हरेक समाज के कमजोर रखे गये समुदाय इसके शिकार होते रहे हैं; उनमें से औरत तो समझो, सब से नज़दीकी निशाना!

औरतों के ऊपर होनेवाले सूक्ष्म मानसिक अत्याचार से ले कर, क्रूर और घिनौने शारीरिक हमले इस पितृसत्ता के ही कारनाम हैं। नफ़रत, अपमान, सत्तापरस्ती, लालच, हिंसा और युद्धखोरी, जैसे पितृसत्ता के अभिन्न लक्षण हैं।

इस नाटक में हमने पितृसत्ता की सियाही और कलम से लिखे गये इतिहास से लेकर वर्तमान की प्रासंगिकता को उजागर किया है। औरतों के हालात का बयान और उन बयानों को बदलने की कोशिश रखी गयी है। इस बदलाव का पहला कदम है –सवाल करना। सुफ़ियानी सभ्यताएं और महानतम कही जानेवाली संस्कृति को ललकारना, सवाल करना और जवाब की खोज जारी रखना।

इस नाटक के किरदारों के साथ साथ दर्शक भी और आज का समाज भी – ज़रूर सवाल उठायेगा: ऐसा क्यों?

Aisa Kyon? Why this?

The co-existence between patriarchy and violence is age old; as if they are two sides of a coin! Whatever the socio-political and economical system it would be, but patriarchy is intigral. Among any age and system the weaker sections are always victimized by it and women are the softest target among them.

From trivial looking or invisible violence to the gang-rapes and cruel slaughtering of women are conspiracies of patriarchy. Hatred, Insult, Hegemony, Greed, Violence and War mongering are inseparable characteristics of patriarchy.

In this play we have tried to explore the relationship between violence and patriarchy in their historical perspective. We have depicted the situation and vulnerability of women through the past and have given hints to change the attitude. The first step towards the change is to challenge the so-called cultural heritage and repressive civilizations. To raise the voice against and keep on searching for the answers.

With the characters of this play, you, the spectators and present society will be also start asking Aisa Kyon? –Why this? And you will see the difference.

ऐसा क्यों? (आवुं केम?)

मानवसंस्कृतिनी शुरुआतना समयथी ज पितृसत्ता अने छिंसा अेकबीज साथे संकणातां रखां छे. ज़ाशे अेक ज सिक्कानी बे बाजु! सामाजिक, आर्थिक अने राजकीय व्यवस्था लले गमे तेवी डोय, गमे ते डोय पश पितृसत्ता अेनी अंदर ओतप्रोत थती आवी छे. दरेक समाजना नबणा समुदायो पितृसत्ताना शिकार बनता रखा छे. अेमांय स्त्रीओ तो ज़ाशे सौथी नजुकनुं निशान!

स्त्रीओ पर थता सूक्ष्म मानसिक त्रासथी मांडीने क्रूर, घृशास्पद शारीरिक अत्याचारोंनां मूणमां आ पितृसत्ता ज छे. नफ़रत, अपमान, सत्ताभोरी, लालच, छिंसकता अने युद्धभोरी.... आ तमाम पितृसत्तानां लक्षणे छे.

आ नाटकमां अमे पितृसत्तानी कलम अने शाडीथी लभायेला छित्तिहासथी शुरु करीने आजनी तारीखमां बनती घटनाओने पशो लेवानो प्रयत्न कर्यो छे. स्त्रीओनी डालतनुं बयान अने अेने बदलवानी कोशिशो रजू करी छे. आवी डालत बदलवानुं पडेलुं पगथियुं छे - प्रश्नो पूछवो : आम केम?.... सूझियाशी सभ्यता-संस्कारो अने कडेवाती मडान संस्कृति सामे पडकार डेकवो, प्रश्नो पूछवा अने जवाबनी शोध यालु राबवी अे आ संघर्षनी निसरशी छे.

आ नाटकनां पात्रोनी जेम ज, प्रेक्षको पश अने आजनो आपो समाज पश काल डीडीने ज़रूर सवाल करतो थशे के आम केम?.... ऐसा क्यों?.... तो आ नाटक सार्थक बनशे अेवो अमने विश्वास छे.